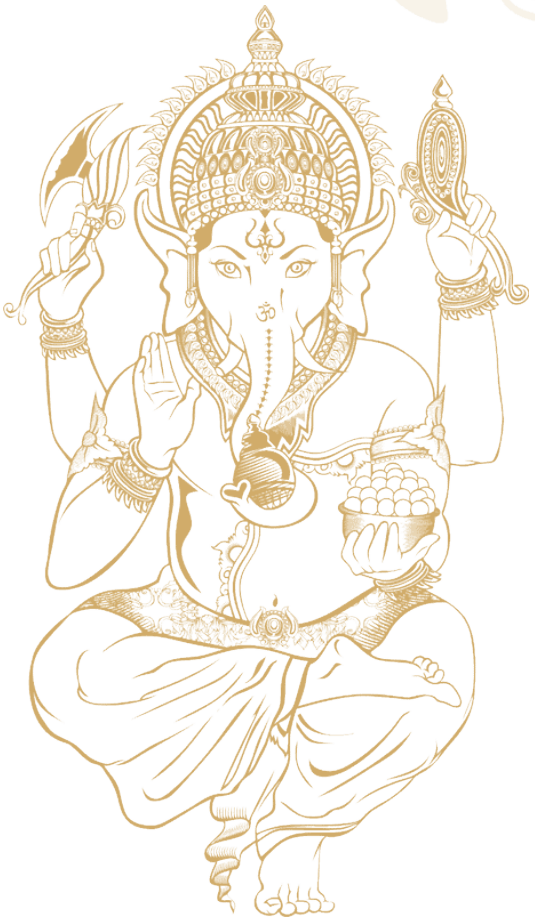

Varshanki

13 Feb 2026

10:48 AM

Aligarh

Model: Baby-Horoscope

Order No: 121288701

तिथि 13/02/2026 **समय** 10:48:00 **वार** शुक्रवार **स्थान** Aligarh **चित्रपक्षीय अयनांश** : 24:13:26
अक्षांश 27:54:00 उत्तर **रेखांश** 78:04:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:17:44 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	20:03:19 घं
वेलान्तर	00:14:12 घं
सूर्योदय	06:57:12 घं
सूर्यास्त	18:07:01 घं
चैत्रादि संवत	2082
शक संवत	1947
मास	फाल्गुन
पक्ष	कृष्ण
तिथि	11
नक्षत्र	मूल
योग	वज्र
करण	बालव

अवकहड़ा चक्र

गण	राक्षस
योनि	श्वान
नाड़ी	आद्य
वर्ण	क्षत्रिय
वश्य	मानव
वर्ग	मूषक
युँजा	अन्त्य
हंसक	अग्नि
जन्म नामाक्षर	भी-भीनी
पाया(रा.-न.)	रजत-ताम्र
होरा	शनि
चौघड़िया	अमृत

विंशोत्तरी

केतु 1वर्ष 5मा 7दि

केतु	13/02/2026
	23/07/2027
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	13/02/2026
शनि	26/07/2026
बुध	23/07/2027

योगिनी

उल्का 1वर्ष 2मा 23दि

उल्का	13/02/2026
	09/05/2027
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	13/02/2026
भ्रामरी	09/07/2026
भद्रिका	09/05/2027

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			17:22:33	मेष	भरणी	2	शुक्र	मंगल	---	0:00			
सूर्य			00:16:50	कुंभ	धनिष्ठा	3	मंगल	बुध	शत्रु राशि	1.65	कलत्र	पितृ	प्रत्यारि
चंद्र			10:35:42	धनु	मूल	4	केतु	शनि	सम राशि	0.99	मातृ	मातृ	जन्म
मंगल		अ	22:05:36	मक	श्रवण	4	चंद्र	शुक्र	उच्च राशि	1.20	आत्मा	भ्रातृ	क्षेम
बुध			16:20:34	कुंभ	शतभिषा	3	राहु	शुक्र	सम राशि	0.99	भ्रातृ	ज्ञाति	साधक
गुरु	व		21:56:48	मिथु	पुनर्वसु	1	गुरु	शनि	शत्रु राशि	1.16	अमात्य	धन	वध
शुक्र			09:16:20	कुंभ	शतभिषा	1	राहु	गुरु	मित्र राशि	1.18	पुत्र	कलत्र	साधक
शनि			05:41:23	मीन	उ०भाद्रपद	1	शनि	बुध	सम राशि	1.22	ज्ञाति	आयु	मित्र
राहु	व		14:49:41	कुंभ	शतभिषा	3	राहु	केतु	मित्र राशि		---	ज्ञान	साधक
केतु	व		14:49:41	सिंह	पू०फाल्गुनी	1	शुक्र	शुक्र	शत्रु राशि		---	मोक्ष	सम्पत

लग्न-चलित

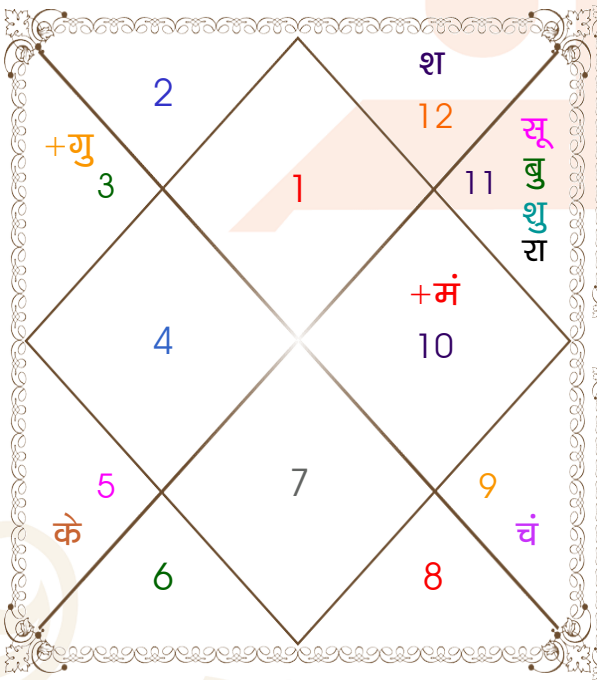

चन्द्र कुंडली

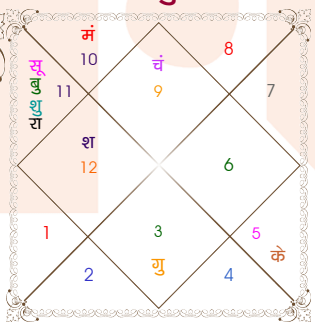

नवमांश कुंडली

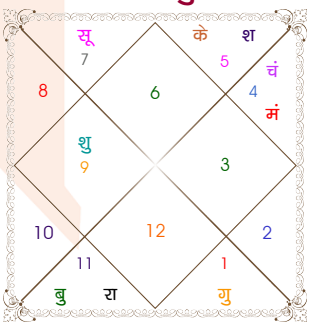

सर्वाष्टकवर्ग

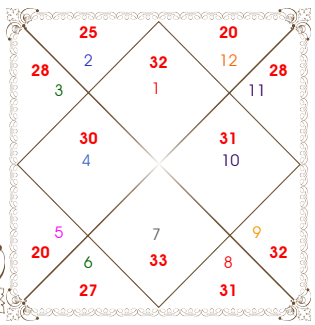

दशमांश कुंडली

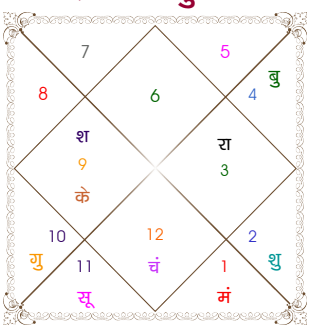

नक्षत्रफल

आपका जन्म मूल नक्षत्र के चतुर्थ चरण में हुआ हैं। अतः आपकी जन्म राशि धनु तथा राशि स्वामी वृहस्पति होगा। नक्षत्र के अनुसार आपकी नाड़ी आद्य, गण राक्षस, वर्ण क्षत्रिय, वर्ग मूषक तथा योनि श्वान होगी। नक्षत्र के चतुर्थ चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रारम्भ "भि" या "भी" अक्षर से होगा।

आप गण्डमूल नक्षत्र में उत्पन्न हुई हैं। यद्यपि इस नक्षत्र के चतुर्थ चरण में उत्पन्न जातक को तथा अन्य किसी को कोई विशेष अरिष्ट नही होता हैं। तथापि सावधानी वश इस नक्षत्र की किसी योग्य विद्वान के द्वारा शान्ति करा लेनी चाहिए। यह कार्य जन्म समय में सम्पन्न करना चाहिए। इसके लिए इस नक्षत्र के कम से कम 28000 जप करवाने चाहिए तथा 27 दिन बाद जब यह नक्षत्र पुनः आवे तो उस दिन जपे हुए मंत्रो के दशांश का हवन करवाना चाहिए। इस प्रकार करने से समस्त अरिष्ट समाप्त हो जाते है तथा जातक सुखपूर्वक रहता हैं।

मंत्र - ऊं अपाधमयः किल्विषमपकृत्यामपोरय अपामार्गत्वमस्मदपटुः दुश मानसागरी

आपको जीवन में समस्त सांसारिक तथा भौतिक सुखों की उपलब्धि होगी तथा आनन्द पूर्वक आप इसका उपभोग करेंगी । साथ ही अतुल धन की स्वामिनी बनकर आप धनाढ्य महिला के रूप में विख्यात रहेंगी। वाहन सुख भी आप प्राप्त करेंगी। आपका शारीरिक बल भी पूर्ण रहेगा। आपकी बुद्धि स्थिर रहेगी तथा चंचलता का इसमें अभाव रहेगा। साथ ही आप स्थिर कार्यों को करने में तत्पर रहेंगी। शत्रुओं को पराजित करने में आपको सफलता मिलेगी तथा वे आपसे नित्य भयभीत रहेंगे। ज्ञानार्जन में भी आप रूचिशील रहेगी फलतः समाज में एक विदुषी के रूप में आप का सम्मान किया जाएगा।

सुखेनयुक्तो धनवाहनाढ्यो हिंस्रे बलाढ्यः स्थिरकर्मकर्ता।
प्रतापितारतिजनो मनुष्यो मूलेकृती स्याज्जननं प्रपन्नः।।
जातकाभरण एवं मानसागरी

अर्थात् मूल नक्षत्रोत्पन्न जातक सुख से युक्त, धनाढ्य, वाहन से सुसम्पन्न, हिंसक, बलवान, स्थिरकार्य करने वाला, शत्रु हन्ता और विद्वान होता है।

आप एक वाक्पटु महिला होंगी तथा बोलने में निपुण रहेंगी। अतः आपके अधिकांश कार्य इसी वाक्पटुता से सम्पन्न होंगे। कभी कभी आप अपनी अभिमानी प्रवृति का भी अन्य जनों के समक्ष प्रदर्शन करेंगी। साथ ही आप बिना किसी प्रमाण के अपने पक्ष को अन्य जनों के समक्ष रखेंगी। अतः अन्य लोग आपकी बातों पर विश्वास नहीं करेंगे।

मूलर्क्षे पटुवाग्विधूर्तकुशलो धूर्तः कृतघ्नो धनी।
जातकपरिजातः

अर्थात् मूल नक्षत्र में उत्पन्न जातक चतुरवाणी से युक्त, अप्रामाणिक, धूर्त, कृतघ्न तथा धनी होता है।

आपको जीवन में धन मान सम्मान का कभी भी अभाव नहीं रहेगा। इनसे आप हमेशा सुसम्पन्न रहकर समाज में पूर्ण आदर प्राप्त करेंगी। आप अपने द्वारा किये गए कार्यों में चपलता का प्रदर्शन नहीं करेंगी अपितु स्थिरता से उन्हें सम्पन्न करेंगी। इसके अतिरिक्त स्थिर धनैश्वर्य को भी आप सर्वदा उपभोग करने में सफल रहेंगी।

मूले मानी धनवान्सुखी न हिंस्रः स्थिरो भोगी।
बृहज्जातकम्

अर्थात् मूल नक्षत्र में उत्पन्न जातक साहसी, धन और मान से सम्पन्न, स्थिर विचारों तथा ऐश्वर्य का उपभोग करने वाला होता है।

रजत पाद में उत्पन्न होने के कारण आप जीवन में सपरिवार धन सम्पति से सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगी। पुराणादि शास्त्रों के श्रवण करने के लिए भी आप नित्य तत्पर एवं उत्सुक रहेंगी। आपके सभी कार्य पुण्य के लिए समर्पित रहेंगे तथा तीर्थयात्रा करने के लिए भी सदैव यत्नशील एवं उद्यत रहेंगी। आप समस्त भौतिक सुखसंसाधनों एवं ऐश्वर्य से सम्पन्न रहेंगी तथा प्रसन्नतापूर्वक इसका उपभोग भी करेंगी। साहित्य या काव्यशास्त्रादि के प्रति भी आपका आकर्षण रहेगा एवं समयानुसार आप इनका अध्ययन भी करेंगी। आप बहुमूल्य रत्नों एवं धातुओं से भी सुसम्पन्न रहेंगी। आपके अधिकांश शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य प्रथम प्रयत्न में ही सफल हो जाया करेंगे। बन्धुवर्ग से आपका विशेष स्नेह का भाव रहेगा एवं उनसे नित्य सहयोग एवं सहायता प्राप्त करती रहेंगी। आप एक सौभाग्यशाली महिला भी होंगी एवं धार्मिक तथा देव पितृ संबंधी कार्यों में नित्य निष्ठावान होंगी। इसके अतिरिक्त आप हमेशा सद्गुणों से सम्पन्न रहेंगी एवं गुणवान पुत्रों से प्रसन्नता प्राप्त करेंगी।

धनु राशि में उत्पन्न होने के कारण आप दीर्घ गले तथा मुख से युक्त होंगी तथा कान, ओंठ, दान्त भी देखने में सुन्दर होंगे। साथ ही भुजाएं पुष्टता से युक्त रहेंगी। आप पैतृक धन से युक्त रहेंगी तथा सुखपूर्वक इसका अपने जीवन में उपभोग करेंगी। आप के मन में दानशीलता का भाव भी विद्यमान रहेगा तथा अवसरानुकूल यथा शक्ति अपनी इस प्रवृति का पालन करने में तत्पर रहेंगी। लेखन कार्य के प्रति भी आप रूचिशील रहेंगी तथा कविता सृजन में आपको सफलता प्राप्त हो सकेगी। शारीरिक शक्ति से आप पूर्ण रहेंगी तथा सभी लोग आपके शारीरिक बल से प्रभावित रहेंगे। भाषण देने की कला में आप निपुण रहेंगी तथा अपने ओजस्वी वक्तव्यों से अन्य लोगों पर अपना प्रभुत्व स्थापित करेंगी। आप विविध प्रकार के कार्यों को सम्पन्न करने की योग्यता से भी युक्त रहेंगी तथा चित्रकला में

आपकी विशेष रूचि भी हो सकती हैं। आप गम्भीर प्रकृति की होंगी तथा धर्म के प्रति आपका श्रद्धा भाव रहेगा एवं धर्म का ज्ञान भी आपको प्रचुर मात्रा में होगा। अपने बन्धुवर्ग से आपके मधुर संबंध रहेंगे। इसके अतिरिक्त आपको ससम्मान या स्नेह द्वारा ही वश में करवाया जा सकेगा या आपसे कार्य करवाया जा सकेगा बलपूर्वक या अन्य साधनों से आप को वश में नहीं किया जा सकता।

व्यादीर्घस्यशिरोधरः पितृधनस्त्यागी कविर्वीर्यवान्।
वक्ता स्थूलदरश्चवाधरनसः कर्मोद्यतः शिल्पवित्।।
कुब्जांसः कुनखी समांसलभुजः प्रागल्भ्यवान धर्मविद।
बन्धुद्विट् न बलात्समेति च वशं साम्नैकसाध्योळश्वजः।।
वृहज्जातकम्

आपकी आखें गोल तथा सुन्दरता से युक्त रहेंगी। साथ ही हाथ एवं कन्धों की लम्बाई भी दीर्घ रहेगी। आपका वक्षस्थल पूर्ण विस्तृत रहेगा। आयु के साथ साथ आपके कमर में झुकाव भी आ सकता हैं। आप को नदी या जल के किनारे निवास करना या भ्रमण करना अत्यन्त ही रूचिकर लगेगा तथा इस आनन्द की प्राप्ति के लिए आप नित्य रूचिशील रहेंगी। आप तीव्र बुद्धि की स्वामिनी होंगी तथा कठिन से कठिन विषय को हृदयगंम करने में प्रवीण होंगी। आप मन से प्रायः प्रसन्न ही रहेंगी। आपकी शरीर की अस्थियां भी पुष्ट एवं दृढ होंगी। आप कृतज्ञता के गुण से भी युक्त रहेंगी तथा अन्य जनों द्वारा उपकृत होने पर उनका हृदय से आभार प्रकट करेंगी। इसके साथ ही आपके पैरों के बीच की दूरी सामान्य से कम रहेगी।

कुब्जाङ्गो वृतनेत्रः पृथुहृदयकटिः पीनबाहु प्रवक्ता।
दीर्घासो दीर्घकण्ठो जलतटवसतिः शिल्पविद् गूढगुह्यः।।
शूरोदृष्टोळस्थिसारो विततबहुबलः स्थूलकण्ठोष्ठघोणो।।
बन्धुस्नेही कृतज्ञो धनुषिशशिधरे संहतांघ्रि प्रगल्भः।।
सारावली

आप हमेशा अपने कार्य को करने में रत रहेंगी बिना काम के खाली बैठना आपकी प्रवृति के विरूद्ध होगा। आप बोलने में अत्यन्त ही चतुराई का प्रदर्शन करेंगी तथा इसी वाक्चातुर्य से आपके कई कार्य स्वतः ही सिद्ध हो जाएगे। आप में त्याग की भावना का भी समावेश होगा तथा समयानुसार अपनी इस प्रवृति का प्रदर्शन भी अन्य जनों के समक्ष करेंगी। शत्रुओं को पराजित करने में आप पूर्ण रूपेण सफल रहेंगी तथा आपके शत्रु प्रायः आपसे भयभीत तथा पराजित से रहेंगे। इसके अतिरिक्त उच्चाधिकार प्राप्त वर्ग में आप प्रिय तथा आदरणीय रहेंगी।

दीर्घास्यकण्ठः पृथुकर्णनासः कर्मोद्यतः कुब्जतनुनृपेष्टः।
प्रागल्भ्यवाक्त्यागयुतोळरिहन्ता साम्नैकसाध्योळश्विभवो बलाढ्यः।।
फलदीपिका

आपके शरीर के सभी अंग सुन्दर तथा पुष्ट रहेंगे जिससे आपका व्यक्तित्व आकर्षक लगेगा। साथ ही अपने कुल तथा परिवार में आप श्रेष्ठ एवं सम्माननीय रहेंगे। समस्त परिवारिक जन आपको यथायोग्य आदर तथा सम्मान प्रदान करेंगे। साथ ही आपको चित्रकला या इंजीनियरिंग के क्षेत्र में आशातीत सफलता की प्राप्ति हो सकती हैं।

बहुकलाकुशलः प्रबलो महाविमलताकलितः सरलोक्तिभाक्।
शशधरे तु धनुर्धरगे नरो धनकरो न करोति बहुव्ययम्।।
जातकाभरणम्

आप विभिन्न प्रकार की कलाओं में प्रवीण रहेंगी। आपका चरित्र निर्मल तथा स्वभाव सुशील रहेगा। आप अपनी बातों में विख्यात होगी। आप अपनी आय को मध्यनजर रखते हुए अत्यन्त सोच समझकर व्यय करेंगी अतः अनावश्यक आर्थिक संकट से प्रायः सुरक्षित रहेंगी।

सौम्याङ्गो रुचिरेक्षणः कुलवरः शिल्पी धनुस्थे विधौ।।
जातक परिजातः

आप एक शूरवीर महिला होंगी तथा अपने अधिकांश कार्य कलापों को साहस तथा निर्भयता पूर्वक सम्पन्न करेंगी। सत्य के प्रति आपकी निष्ठा रहेगी तथा यत्नपूर्वक इसका पालन करने के लिए सदैव तत्पर रहेंगी। अन्य जनों के प्रति आपके मन में प्रेम तथा स्नेह का भाव अधिक रहेगा। आप नाना प्रकार के नाटक करने में भी सफल सिद्ध होंगी। आपकी वाणी अत्यन्त ही प्रिय तथा मधुर होगी अतः सभी लोग आपसे प्रसन्न रहेंगे। परन्तु यदा कदा आपके द्वारा ऐसा कार्य सम्पन्न होगा जिससे परिवार तथा कुल के लोग परेशानी का अनुभव करेंगे परन्तु समाज में आप पूर्ण रूप से लोकप्रिय रहेंगी। आप स्थिर बुद्धि की स्वामिनी होंगी तथा जीवन में गुणवान एवं बुद्धिमान पति को प्राप्त करके प्रसन्नता की अनुभूति करेंगी।

शूरः सत्यधियायुक्तः सात्विको जननन्दनः।
शिल्पविज्ञान सम्पन्नो धनाढ्यो दिव्यभार्यकः।।
मानसागरी

आप एक गुणवती महिला होंगी तथा समाज में पूर्ण मान सम्मान प्राप्त करेंगी। आप अपने अन्य भाई बहिनों में श्रेष्ठ तथा योग्य होंगी एवं समाज के सभी वर्गो में आप समान रूप से प्रिय रहेंगी। आप धार्मिक प्रवृति की होंगी तथा देवता, ब्राहमण तथा गुरूजनों के प्रति आपके मन में पूर्ण आदर तथा सम्मान का भाव रहेगा एवं अवसरानुकूल इनकी सेवा तथा पूजा आप करती रहेंगी। आप मधुर गति से गमनशील रहेंगी परन्तु सहनशीलता की शक्ति का आप में प्रायः अभाव दृष्टिगोचर होगा।

धनुरिवगुणयुक्तः कीर्तिवाक् पूजनीयः।
कुलपतिरूपचेता बन्धुवर्गैक पात्रः।।
बहुजन धनयुक्तो देवविप्रर्षि सेवी।

मृदुगतिरसहिष्णुः कार्मुको यस्य राशिः।।
जातक दीपिका

राक्षस गण में पैदा होने के कारण आपकी प्रवृति कभी कभी अधिक बोलने की रहेगी साथ ही हृदय में कोमल भावों की भी अल्पता होगी परन्तु आप में साहस का भाव पूर्ण रूप से विद्यमान रहेगा। अतः आपके अधिकांश कार्य इसी से सफल होंगे। आप के स्वभाव में उग्रता का भाव भी रहेगा तथा छोटी छोटी बातों पर शीघ्र ही क्रोधित होने की भी आपकी प्रकृति रहेगी। आप अन्य लोगों से विवादादि भी करती रहेंगी तथा शारीरिक बल से आप सम्पूर्ण रहेंगी परन्तु अन्य जनों का आपके प्रति वैमनस्य या भाव भी रहेगा।

जीवन में आप उन्माद या प्रमेह रोग से व्याकुल हो सकती हैं। साथ ही आपका सौन्दर्य भी आकर्षक रहेगा किन्तु आप कभी कभी कठोर वाणी का उपयोग अपने सम्भाषण में करेंगी जिससे अन्य लोग आपसे अप्रसन्न रहेंगे। अतः प्रयत्नपूर्वक अपने सम्भाषण में मधुर शब्दों का ही प्रयोग करें।

अनल्पजल्पश्च कठोरचित्तः स्यात्साहसी क्रोधपरोद्धतश्च।
दुःशीलवृतः कलीकृत्वलीमान रक्षोगणोत्पन्नरो विरोधी।।
जातकभरणम्

अर्थात् राक्षस गण में उत्पन्न जातक व्यर्थ बोलने वाला, कठोर, साहसी, अकारण ही क्रोधित होने वाला, नीच प्रकृति से युक्त, झगडू, बलवान तथा अन्य लोगों का विरोधी होता है।

श्वान योनि में उत्पन्न होने के कारण आप अपने समस्त कार्यों को करने में सदैव उत्साह पूर्वक तत्पर रहेंगी। अतः अपने अधिकांश कार्यों में सफल रहेंगी। आप साहस तथा निर्भय पूर्वक अपनी समस्त सांसारिक समस्याओं का सामना करेंगी तथा उनका समाधान भी स्वयं ही करेंगी। बन्धुवर्ग से आपके मधुर संबंध रहेंगे माता पिता के प्रति आपके मन में असीम श्रद्धा भाव रहेगा तथा निष्कपट रूप से आप उनकी सेवा यत्नपूर्वक करती रहेगी।

सोद्यमः सुमहोत्साही शूरः स्वज्ञाति विग्रही।
मातृपित्रो सदाभक्तः श्वानयोनौसमुद्भवः।।
मानसागरी

अर्थात् श्वान योनि में उत्पन्न जातक उद्यमी, उत्साह से परिपूर्ण, शूरवीर, अपने बन्धुवर्ग से द्वेष रखने वाला तथा माता पिता का भक्त होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा की स्थिति नवम भाव में स्थित है। अतः आपकी माता जी का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा एवं आयु भी दीर्घ रहेंगी। माता की आप अत्यन्त ही प्रिय रहेंगी तथा जीवन में उनसे पूर्ण सहयोग तथा सुख संसाधनों को प्राप्त करेंगी। धन सम्पत्ति से वे प्रायः युक्त ही रहेंगी तथा आपको वांछित आर्थिक तथा अन्य सहायता को देने के लिए सर्वदा

तत्पर रहेंगी। साथ ही आपकी भाग्योन्नति में भी उनका विशेष योगदान रहेगा।

आप भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा भाव रखेंगी एवं सम्मान पूर्वक उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। साथ ही आप आजीवन उनकी सुख सुविधा के लिए भी प्रयत्नशील रहेंगी। आप एक दूसरें से हमेशा सहमत रहेंगी एवं मतभेदों का प्रायः अभाव ही रहेगा। अतः आपके परस्पर संबंध मधुरता से युक्त रहेंगे इस प्रकार आप एक दूसरें के लिए शुभ रहेंगी।

आपके जन्म काल में सूर्य एकादश भाव में स्थित है अतः पिता की आप हमेशा प्रिय रहेंगी। उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा लेकिन समय समय पर मध्यम रूप से वे शारीरिक कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे। धन सम्पत्ति से वे सर्वदा युक्त रहेंगे एवं इसका उनके पास अभाव नहीं रहेगा। साथ ही जीवन में आपको हर प्रकार से अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। इसके अतिरिक्त आपके आय स्रोतों की वृद्धि करने एवं उनमें उन्नति प्राप्त करने के लिए वे आपको पूर्ण आर्थिक सहयोग तथा निर्देश भी प्रदान करते रहेंगे।

आप भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान का भाव रखेंगी एवं उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर संबंध अच्छे होंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी विद्यमान रहेंगे। जीवन में आप उनको पूर्ण सहयोग प्रदान करती रहेगी एवं सुख दुःख में उनकी सेवा भी करती रहेंगी।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति दशम भाव में है अतः आपके भाई बहिनों का शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा उनमें शारीरिक दुर्बलता भी परिलक्षित होगी। आपके प्रति उनके मन में स्नेह तथा सम्मान का भाव रहेगा एवं धन सम्पत्ति से भी वे युक्त रहेंगे एवं जीवन के समस्त महत्वपूर्ण कार्य की सिद्धि में आपको अपना सहयोग प्रदान करेंगे। इसके अतिरिक्त सुख दुःख में भी वे आपके साथ रहेंगे। तथा नौकरी या व्यापारादि में आपका सहयोग करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति स्नेह का भाव रहेगा एवं आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी। लेकिन कभी कभी आपसी मतभेदों के कारण इसमें कटुता भी आएगी लेकिन यह अल्प समय तक रहेगी। साथ ही आप उनकी आजीविका संबंधी कार्यों में में यथाशक्ति आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहायता प्रदान करती रहेंगी।

आपके लिए श्रावण मास, तृतीया, अष्टमी, त्रयोदशी तिथियां, भरणी नक्षत्र, वज्र योग, तैतिलकरण, शुक्रवार, प्रथम प्रहर तथा वृष राशिस्थ चन्द्रमा अशुभ फलदायक रहेंगे। अतः आप 15 जुलाई से 14 अगस्त के मध्य 3,8,13 4तथियों, भरणी नक्षत्र, वज्रयोग तथा तैतिलकरण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रय विक्रयादि अन्य शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही शुक्रवार प्रथम प्रहर तथा वृष राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखें। इन दिनों तथा समय में शरीरिक सुरक्षा तथा स्वास्थ्य के प्रति विशेष रूप से सावधान रहें।

यदि आपके लिए समय अशुभ चल रहा हो मानसिक तथा शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति में बाधाएं अथवा अन्य शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में सफलता नहीं मिल रही हो तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट हनुमान जी की श्रद्धापूर्वक उपासना करनी चाहिए तथा मंगलवार एवं गुरूवार के उपवास करने चाहिए। साथ ही सोना, पीत वस्त्र, पीत चन्दन, चने की दाल, हल्दी इत्यादि पदार्थो का दान करना चाहिए। इससे आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा अन्य अशुभ फलों में भी न्यूनता आएंगी। इसके अतिरिक्त वृहस्पति के तांत्रीय मंत्र के 16000 जप करवाने चाहिए इससे समस्त अरिष्ट दूर होंगे तथा लाभमार्ग प्रशस्त होंगे।

ऊँ ग्रां ग्रीं ग्रों सः वृस्पतये नमः।
मंत्र- ऊँ ऐं क्लीं वृहस्पतये नमः।